B.A. II Hindi Hons.

हिन्दी साहित्य में भक्ति का उदय और विकास

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का अध्ययन अत्यन्त रोचक एवं चुनौतीपूर्ण रहा है। रोचक इसलिए कि हिन्दी साहित्य के इतिहास के अध्ययन में परस्पर विरोधाभासी स्थितियों से अक्सर ही गुजरना पड़ता है। चुनौतीपूर्ण इसलिए कि उपलब्ध साहित्यिक सामग्रियों में प्रामाणिकता का अभाव तो रहा ही, साथ इनमें प्रक्षिप्त अंश इतने अधिक हैं कि इसका अध्ययन चुनौतीपूर्ण हो गया है। हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल अपने आप में पूर्णता लिए हुए है। लगभग तीन सौ पच्चीस वर्षों तक इस काल में भक्ति की धारा क्रमशः अविच्छिन्न भाव से प्रवाहित दिखती है तथा इसमें प्रक्षेप की संभावना भी अत्यल्प है। आदिकालीन साहित्य के युद्ध एवं शृंगार स्वरूप से निकलकर हिन्दी साहित्य सहसा भक्ति की पावन सरिता में अवगाहन करने लगता है। साहित्य के इस सहसा चरित्र परिवर्तन पर मन में प्रश्न उठने लगते हैं। इन्हीं प्रश्नों से आंदोलित होकर आचार्य शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है — "अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।" आचार्य शुक्ल के स्वर में स्वर मिलाते हुए बाबू गुलाबराय भी लिखते हैं — "मनोवैज्ञानिक तथ्य के अनुसार हार की मनोवृत्ति में दो बातें संभव हैं: या तो अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता दिखाना या भोग-विलास में पड़कर हार को भूल जाना। भक्ति काल में लोगों में प्रथम प्रकार की प्रवृत्ति पाई गयी।" इनके कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी साहित्य का भक्ति साहित्य पराजित मानसिकता से उपजा साहित्य है।

कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने भारत में भक्ति के उदय के सन्दर्भ में एक सर्वथा नये एवं चौंकानेवाले सिद्धान्त का निरूपण किया कि भारत में भक्ति का उदय ईसाई धर्म से

notes
Phone
email
website

हुआ तथा महाभारत में वर्णित श्वेत द्वीप और कोई नहीं यूरोप है तथा वहीं के निवासी मद्रास में आकर बस गये थे जिनके प्रभाव से भक्ति का उदय हुआ। इन विद्वानों में वेबर, कीथ, जार्ज ग्रियर्सन इत्यादि प्रधान हैं उसी प्रकार हुमांयू कबीर, डॉ॰ आबिद हुसैन डॉ॰ ताराचन्द जैसे विद्वानों ने तो यहां तक कहने का दुःसाहस किया कि ~~भक्त~~ भारत का भक्तिआन्दोलन इस्लामी संस्कृति के सम्पर्क की देन है उनकी दृष्टि में शंकराचार्य, निम्बार्काचार्य, स्वामी रामानुज एवं स्वामीरामानन्द इस्लामी दर्शन से प्रभावित थे। इनके दार्शनिक मान्यताओं पर इस्लाम का प्रभाव है।

सत्य तो यह है कि भारत में आने के पूर्व इस्लाम का कोई दर्शन ही नहीं था। वह तो लूटमार करने वाला गिरोह था जो अपनी असुरक्षा से पीड़ित होकर भारत की ओर आया था। ~~जो लोग~~ वे लोग शंकर के अद्वैतवाद को अपना एकेश्वरवाद समझने की भूल कर बैठे हैं। भारत में इस्लाम के आने के सदियों पूर्व भारत में धर्म और दर्शन पर गहरा चिन्तन आरंभ हो चुका था। भक्ति का उद्गम यही भारतीय स्रोत है। भारतीय चिन्तनधारा विश्व में सबसे समृद्ध है। वेद, उपनिषद, शतपथ ब्राह्मण, आरण्यक, पुराण, श्रीमद्भगवद् गीता जैसे उच्च कोटि के धर्म एवं दर्शन के ग्रन्थ अन्यत्र ढूंढे न मिलेंगे। जार्ज ग्रियर्सन, मैक्समूलर प्रभृति विद्वानों ने इस सत्य का अनुभव किया था और इनमें से अनेक ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद कर जब अपने देश में प्रस्तुत किया तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। भारतीय चेतना की इसी विशिष्टता से भक्ति का प्राकट्य हुआ जिसे इस्लाम और इसाईयत से निकला हुआ प्रमाणित करने का गर्हित प्रयास विधर्मियों ने करके भारत को नीचा दिखलाने का प्रयास किया है। सच्चाई तो यह है कि भक्ति भारत की अपनी खोज है यह शुद्ध भारतीय रत्न है इस पर किसी दूसरे धर्म की छाप नहीं है।